अर्कवर्न॥ पाद्यादि॥ निवाडन॥ पूष्पन्यास॥ ञापयाय॥ श्राहनिवजा॥ पशुंख पहावनपू
जा॥ घण्टवाइला॥ स्तुति॥ सहूनलूय॥ महावविक्रिय॥ दशुनीवविक्रिय॥ दुखापिखाय
ज्ञाछ्राय॥ ॰ ॥धम्मनियनिथयस॥ संघमण्डल॥ अमोघपाशमण्डलथमशानथाय॥
गणावृक्षमण्डल॥ ॐ आः वैश्रावनायवज्र पूष्पप्रतिछ स्वाहा॥ मध्य॥ ॐ आः अक्षोभ्यायवज्र
पूष्पप्रतिछ स्वाहा॥ पूर्व॥ ॐ आः रत्नसम्भवायवज्र पूष्पप्रतिछ स्वाहा॥ ॐ आः अमिता:
दक्षि॥
भायवज्र पूष्पप्रतिछ स्वाहा॥ ॐ आः अमोघसिद्धियवज्र पूष्पप्रतिछ स्वाहा॥ उत्त॥
पश्चि॥

आ॰ म॰ अभिलेखालय
ASHA ARCHIVES
1475

ॐ आः लोचनायै वज्रपुष्पं प्रतीच्छ स्वाहा॥ आग्नेय॥ ॐ आः मामकियै वज्रपुष्पं प्रतीच्छ स्वाहा
॥ नैरत्य॥ ॐ आः पाण्डुरायै वज्रपुष्पं प्रतीच्छ स्वाहा॥ वायव्य॥ ॐ आः तारायै वज्रपुष्पं प्र
तीच्छ स्वाहा॥ ईशान॥ ॥ पञ्चमहानपूजा॥ स्तुति॥ यावन्ति नमनादि मध्य निधन सान्त
विवृक्षः स्वयं बुद्धावावुद्धवा धनाथ मरायं मागदिदगुह्यक्रवं नमोस्तुन रूपासि
वज्रवनश्रवकृदः स्थाजुनः कल्पिदः नानादिगन्तनापरूविमलि प्राकारयतन्त्र
नमः॥ ॥ साहसवनामा॥ ॥ थमउनः निग्वयनं नामा॥ अर्दृगानात्यय॥ निग्व

यनदिगना॥ ॐ मं दिवस॥ थनूवि॥ भूपाराय॥ लावक॥ यावदवाधिमण्डुलनिख
उनाम॥ जावतकाय: वृद्धपदलामाल॥ वृद्धिस्त्रावक्रं॥ अध्वयादिसमन्वागतः
महाकारुणीक॥ उयावन्तः सर्व्वज्ञ॥ समस्तासत्व॥ सर्व्वदृष्टिन॥ दसदिगसर्व्वग
वं: सर्व्वबेनरूयालीनं॥ समस्तारत्यक्रागवत: महापूरुषं॥ नवराापूरुष॥ अ
त्ययकाय॥ दर्य्यमजिव॥ सनार॥ अनूलनकार्यं॥ [illegible]मीन॥ सलन
गच्छामि॥ जनसरनयाउ॥ द्वियदानामग्रो॥ मनूधदवदाका याउ त्यम॥ ॥

गुरुरत्नऽस्यधायाम्॥ त्रर्वच्छिनपी ॥ निग्रयन ॥ नयान २ तिनपी ३ सापाल॥ ऽडयथि
का॥ तनपाल धाला॥ साधू ३ तिवना ३ वक ॥ स्वान ॥ अरुग ॥ लिख कायाव ॥ बुद्धस
कुलसहायक नयक ॥ निजनितायाय॥ ॥ इतिपि सो भगवान् अर्हन्सम्यक्
संबुद्धो विद्याचरणसम्पन्नः सुगतो लोकविद् अनुत्तरः पुरुषदम्य ॥ सारथि
शास्ता ॥ देवानाञ्च मनुष्याणाञ्च ॥ बुद्धो भगवान् नमो बुद्धनित्यय ॥ इदं पुथः
मकुलक निजनियामि॥ ॥ वनिविययमन्त्र॥ ॐ नमः श्रियद्धिकानां ॥ सर्वतथा

गतानां ॥ अनुत्तरपरम ॥ कनकवर्णि इडाह महावनि स्वाहा॥ ॥ नगोधर्मसम्
ले॥ [illegible] ॐ आः ॥ आर्यपद्मप्राप्तमिताय वज्रपुष्प प्रतिच्छ स्वाहा॥ मध्य॥ ॐ आ
ः आर्यगुण्कहाय वज्रपुष्प प्रतिच्छ स्वाहा॥ पूर्व॥ ॐ आः आर्यदिगन्तमिकाय व
ज्रपुष्प प्रतिच्छ स्वाहा॥ दक्षिण॥ ॐ आः आर्यसमाधिनाजाय वज्रपुष्प प्रतिच्छ स्वा
हा॥ पश्चिम॥ ॐ आः आर्यलिकानितानाय वज्रपुष्प प्रतिच्छ स्वाहा॥ उत्तर॥ ॐ
आः आर्यसर्वमयूहुनीकाय वज्रपुष्प प्रतिच्छ स्वाहा॥ मध्य॥ ॐ आः आर्य

नलिनविस्फुरा यवज्रपुष्पप्रतिछ स्वाहा ॥ नुंय स्य ॥ ॐ आः हूं आर्य समन्तुयना मा
नमायवज्रपुष्पप्रतिछ स्वाहा ॥ वायुवं ॥ ॐ आः हूं आर्य गथागनगुह्यकायवज्रपु
ष्पप्रतिछ स्वाहा ॥ नश्रतन ॥ पञ्चरपहान पुजा ॥ स्तुति ॥ यासवद्धनयानयस्य
य समगमान्ध्युषिन ४ श्रावकानूयामागच्छनयाउ छिनकर्णाकाथसम्प
दिना ॥ सव्वाकानमिदंवदन्किमून विश्वययासंगगाः नमोश्रावकवोधिमत्व
गणानावूद्धमानुनम ॥ ॥ साहमवनामा ॥ थव [illegible] उनीश्वयनंना

मा ॥ त्रवीदंगागायय ॥ निश्वयनदगनायाद्दा ॥ ॐमदिवसं ॥ थनूनिस
मूयाडाय ॥ नावक ॥ यावडावाधि ॥ आवनकाय ॥ मञ्जुलचन्दनोन ॥ वृद्धिय
दलागाल ॥ धर्म्मगवनगरकामि ॥ धर्मस्कन्ध गन नयाद्दा ॥ विनागनी ॥ ना
गनेगाद मार्गा ॥ प्रवर्न ॥ क्रियवयामिरिग्व ॥ ॥ शिक्षागवनयाद्दा धुनः
॥ ॥ गुनसुदिगनायाद्दा ॥ नवं ॥ निश्चयन ॥ छिनपि ॥ २ नयान ॥ निन
पि ॥ सायोन २ डवयिक ॥ ननयान ॥ क्रापा ॥ साघ ३ नन २ वनाः स्थानः आग्

[illegible] नाति	[illegible]	
श. [illegible]	[illegible]	श्रामि विशार
श. नाति	[illegible]	मक सिंह
श्रमशु त्रिकाकि श्री गहत्त पाथर माघ विचिन्तय॥		मेष कन्य
		तुले मीन
[illegible] दिन	[illegible]	कर्क कुम्भ
[illegible] नाति	[illegible]	धन वृष
[illegible] दिन	[illegible]	विछ मिथु
[illegible] नाति	[illegible]	थागी स्वबाचा

स्वज्ञायते ॥ क्रम गम कूम विघ्नके ॥ सवकार्य्य सुसिद्ध्यै ॥ सर्व संकाविनिमुक्तं ॥ श्र
मतं ग्रुरुलक्षणं ॥ श्री महादेवन ज्ञास्यामाथा ॥ गुरु ॥ ॥

१ श्रावन भाद्रपद चैत्र फागुन वैशाष वालप्रकारस्त्रालय्यो ॥

सू॰ दिन		१ वृष तुल
सू॰ रात्रि		कन्या कुम्भ
चं॰ दिन		मकर मिन
चं॰ रात्रि		कर्क धन
		विछ मेष
		सिंह ख्या
मं॰ दिन		ज्याथा नात्र
मं॰ रात्रि		मित्रयद्धना
बु॰ दिन		त्र ढूके मना
बु॰ रात्रि		हिव सिद्ध
बृ॰ दिन		त्रद्य आदिन
बृ॰ रात्रि		भावना
शु॰ दिन		

॥ प्र३ शा गमनयात्रा रिक्तं नक्षत्र उत्तम॥ अश्विनि मेषवथा मृगमूला पु
नवसू पुष्य ज्येष्ठ तथा हस्ते प्रस्थाने उत्तमा मता॥ अश्विनि नक्षत्र रेवति
मृगशिर मूल पुनवसू पुष्य ज्येष्ठ श्रवण नक्षत्र उत्तम संज्ञिका॥
॥ यहि त्रिपुष्कराणि स्वातिवीनावर्धारुणी॥ श्रवणावधनिष्ठा वप्रस्थानमध्य
मास्मृता॥ थवो नक्षत्र मध्यम॥ ॥ विशाखा वा कृत्तिका सपो ज्येष्ठ यस्मृथ॥
॥ शस्वाति कृत्तिका वर्ज प्रस्थान गमने ध्रुवं॥ थवो नक्षत्र गमन मयाव माय
ह्वं॥

॥ ॐ नमः श्रीगणेशाय॥ शिवेन कथितं शास्त्रं॥ संक्षेपं कथितं मया॥ लोकाना
वहिताथाय॥ दिव्यज्ञानि मदुर्लभं॥ नवालतिथिनक्षत्रं नवाग्रंकरमादिकं॥ व्य
तिपातादि समया कृष्णसंक्रान्ति मवव॥ विवाह यात्रा शिवरहबन्धं जी
व श्वकालनकायव॥ अमवृवेष्न यडसनानि सर्वानिकार्यानि मनायेमा
नि॥ इत्थं वशिनं लेख्यं सर्वविघ्नापशान्तये॥ सर्वकार्येषु कर्तव्यं निश्च
मवनसंशय॥ शून्य ० आवर्त ६ कालीव ८८ अमृतादि ६ वेनु [illegible]कं॥ नक्षु
च्चलहत्यन कार्य॥ आवर्तनयविग्रह॥ मननकालवेलाया॥ उवहानि॥

१ पाद थापन, निसा न याग॥
हृसा वहृगाव निछुय माल
सावबा मदृगा दव, सिद्दवा
न समस्मान, माथ वनकाव
सिद्धजू नया, ज संगनन्मा
डिपन सूयाव दुगिरखाव
मदृ सा याव, वाग वताव
थन, कृकडयके, लंपर्थी
ज्ञाहाप र्ची, नवनत्न, पं
वनत्न, कलिस थूछाव,
सिजन, घनवा सूथछ
वने॥

१ थनगुरुकगाजन, मालकाकि
स्या यायाव, अनपाधू ज्ञायाय,
सिद्दवनास नावकाव, ज्ञ
मि, ज्ञाथपूज्ञ याछाव, अ
नया खव ह्माय, गौजमानन
वं मायभिन, थंसायगाव,
अनयाविय, ज्ञमिदृद्भिना
वंक्कन, अग्नि कान ननीस
०० मन नकान गाथ्व गति
साने॥
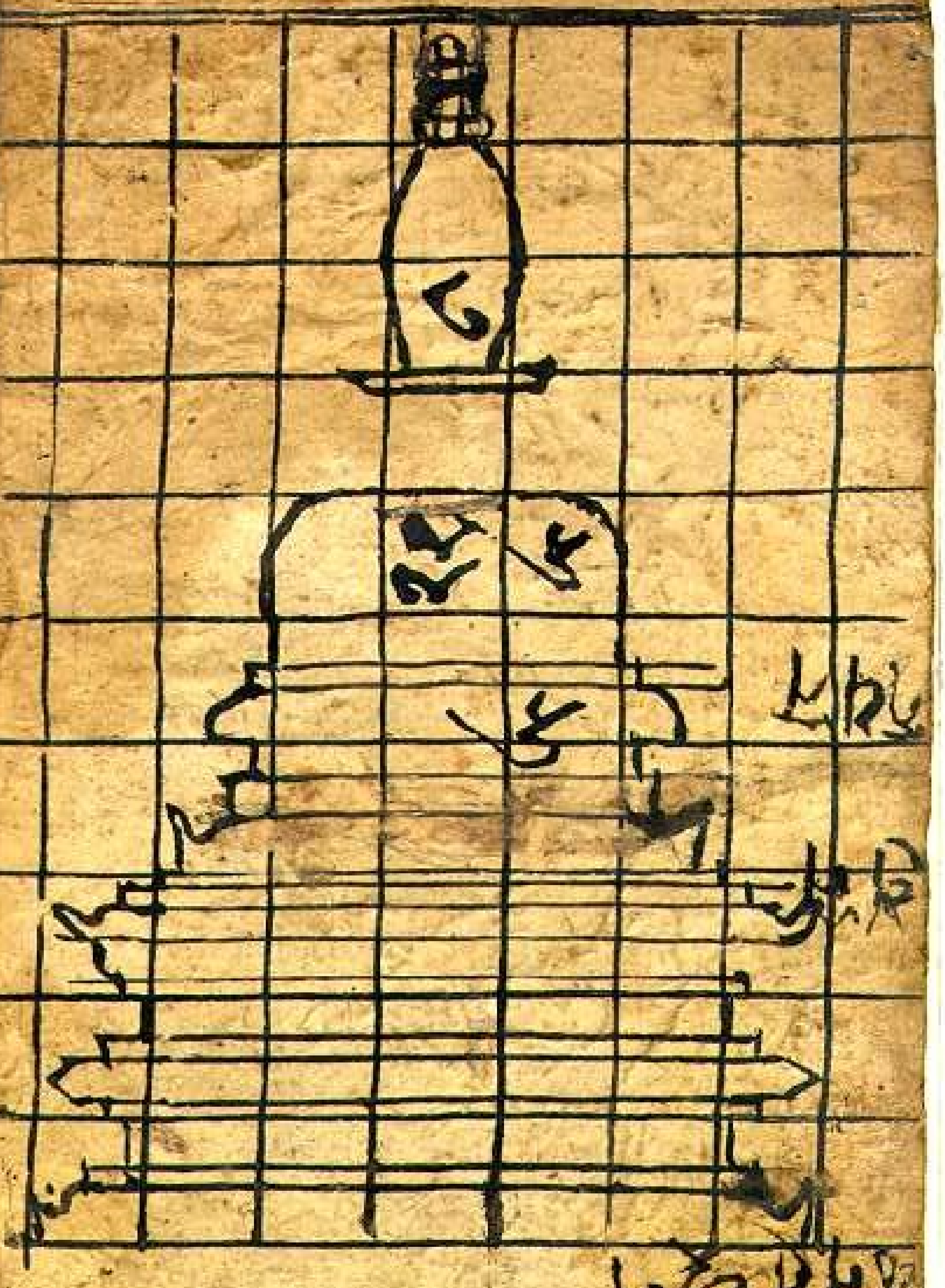
ध्यान्हिपि॥